सप्तम माला, खंड 5, अंक 11, सोमवार, 23 जून, 1980/2 आषाढ़, 1902 (शक)

लोक-सभा वाद-विवाद

का

हिन्दी संस्करण

[तीसरा सत्र]

सत्यमेव जयते

[खंड 5 में अंक 11 से 20 तक हैं]

लोक सभा सचिवालय
नई दिल्ली

मूल्य : चार रुपये

निधन संबंधी उल्लेख

(श्री संजय गांधी, संसद सदस्य)

श्री कमलापति त्रिपाठी

श्री चरण सिंह

श्री समर मुखर्जी

प्रो० मधु दंडवते

श्री सी० टी० दंडपाणि

श्री अटल विहारी वाजपेयी

श्री इन्द्रजीत गुप्त

श्री यशवंतराव चव्हाण

श्री ए० नीलालोहिथादसन

श्री मनीराम बागड़ी

श्री जी० एम० बनातवाला

श्री अमर राय प्रधान

श्री गुलाम रसूल कोचक

श्री एन० सुन्दरराजन

श्री फ्रैंक एंथोनी

लोक सभा

सोमवार, 23 जून, 1980/2 आषाढ़, 1902 (शक)

लोक-सभा ग्यारह बज कर दो मिनट पर समवेत हुई ।

[अध्यक्ष महोदय पीठासीन हुए]

निधन संबंधी उल्लेख

अध्यक्ष महोदय : मुझे बहुत दु:ख के साथ श्री संजय गांधी, जो कि इसी सदन के सदस्य थे, के असामयिक निधन की घोषणा करनी पड़ रही है । मानवीय जीवन की यह एक त्रासदी है कि कई बार एक अत्यंत उदीयमान व्यक्तित्व बड़ी बड़ी आकांक्षाओं तथा आशाओं को पूरा करने से पहले ही समाप्त हो जाता है । जब उनकी माता हमारी प्रधान मंत्री बहुत अधिक विपदाओं तथा कठिनाइयों के दौर में से गुजर रही थीं, तो वह चट्टान की तरह उनका साथ देते रहे । वह देश में युवा पीढ़ी की बढ़ती हुई शक्ति के प्रतीक थे और उन्होंने युवा शक्ति को रचनात्मक तथा राष्ट्र-निर्माण कार्यों में लगाने का प्रयत्न किया । वह एक होनहार संसद-सदस्य थे और उन्होंने बहुत शीघ्र ही इस क्षेत्र में अपनी प्रतिभा की धाक जमा दी । हमें उनसे बड़ी आशायें थी और हमें इस बात का पूरा विश्वास था कि वह हमारी आकाक्षांओं की भरपूर पूर्ति करेंगे । हम अपना दु:ख शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकते । हम प्रधान मंत्री के प्रति अपनी हार्दिक संवेदना व्यक्त करते हैं और उन्हें दु:ख तथा शोक की इस घड़ी में केवल यही आश्वासन दिलाना चाहते हैं कि श्री संजय गांधी ने देश के युवकों के समक्ष जो स्वप्न संजोया था तथा जो प्रतिज्ञा की थी, हम उसे पूरा करने का प्रयत्न करेंगे ।

पंडित जी ।

रेल मंत्री (श्री कमलापति त्रिपाठी) : मान्यवर, ऐसे समय में कुछ कहना बड़ा कठिन हो जाता है । एक बड़ी दुखद घटना घटी, ऐसी घटना जो हृदय विदारक है, मान्यवर, और सारे देश को और संसार को स्तब्ध कर देने वाली है ।

संजय जी, आज एक हवाई दुर्घटना के शिकार हो गये । एक विकसित होता हुआ जीवन, देश की सेवाओं में बढ़ता हुआ जीवन, इस तरह समाप्त हो जाए, तो हमारे सदन

के लिए भी और राष्ट्र के लिए भी बड़े दुःख और पीड़ा का कारण होता है। एक बहुत बडा धक्का लग रहा है हम सब को और हमारे देश को। ऐसा लगता है कि जैसे एक वृक्ष बढ़ रहा था विशाल होने के लिए, सहसा उस पर वज्रपात हुआ और बीच में ही वह समाप्त हो गया।

संजय जी, मान्यवर, इस सदन के सदस्य थे, थोड़े ही समय सम्मानित सदस्य रहे हैं। हम ने एक पार्लियामेन्टेरियन के रूप में उन के काम को देखा है। ऐसा लग रहा था कि वह एक ऐसा व्यक्ति है जो राष्ट्र की सेवा के मार्ग में उभरते हुए जीवन का प्रतीक है। संजय गांधी एक ऐसे व्यक्ति रहे हैं कि बहुत से विवादास्पद विषयों में उन का नाम लिया जाता रहेगा। उन के ऊपर आरोप भी लगे हैं, बहुत सी जांच-पड़तालें हुई हैं और सब जगहों से वे निष्कलंक और निर्दोष निकले हैं। देश की नई पीढ़ी और युवकों की भावनाओं और आकांक्षाओं के तो वे प्रतीक थे। हमारे देश के नौजवानों की बड़ी आस्था और बड़ा विश्वास उन में था। उन के व्यक्तित्व ने करोड़ों नौजवानों को प्रभावित किया।

मान्यवर, इस समय कुछ और अधिक कहना मेरे लिए संभव नहीं हो रहा है। मेरा ध्यान रह रह कर प्रधान मंत्री, श्रीमती इन्दिरा जी के प्रति जाता है। उन में बड़ी वीरता मैंने देखी है, बड़ी दृढ़ता देखी है। मैंने देखा है कि संकटों का सामना किस संतुलन के साथ, किस वीरता और दृढ़ता के साथ, धैर्य और साहस के साथ करने की उन में शक्ति है, क्षमता है।

मान्यवर, मैं अभी अभी विलिंगडन अस्पताल में गया था। वहां जिस संतुलन और धैर्य के साथ उन्हें लोगों से मिलते देखा, उसे देख कर के आश्चर्य हुआ। इस दुर्घटना में एक पायलट भी मर गया है। मान्यवर, उस के परिवार के लोग आये हुए थे। वे द्रवित हृदय से रुदन कर रहे थे। जिस धीरता के साथ, सहानुभूति के साथ, स्नेह के साथ और संतुलन के साथ इन्दिरा जी उन्हें समझा रही थीं, उन्हें धैर्य बंधा रही थीं, वह देख कर के, मान्यवर, मैं तो चकित हो गया। मैं यह मानता हूं और यह जानता भी हूं कि ऐसे समय में एक मां की, उसके हृदय की क्या स्थिति हो सकती है ?

मान्यवर, मैं नम्रता के साथ कह सकता हूं कि नेहरू परिवार से मेरा बड़ा पुराना सम्बन्ध रहा है। मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ है, मान्यवर, 1921 से, गांधी जी की पुकार पर, देश की स्वाधीनता के युद्ध में भाग लेने का, आगे बढ़ने का। उसी समय से, मेरा सम्बन्ध नेहरू परिवार से रहा है। मान्यवर, मैंने पंडित मोतीलाल नेहरू के नेतृत्व में काम किया। मैंने देखा कि किस प्रकार देश सेवा के, राष्ट्र की सेवा के, बलिदान और त्याग के वे प्रतीक बन गये थे। आरंभिक गांधी युग में, सन् 1930 में उनका लखनऊ में देहान्त हुआ। उस के बाद जवाहर लाल नेहरू के साथ काम करने का अवसर मिला। वैसे उनके साथ तो पहले ही से काम करने का अवसर मिलता था। वे हमारी अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के पदों पर रहे, प्रदेश कांग्रेस कमेटी के पदों पर रहे, हमारे अध्यक्ष रहे। उन के साथ काम करने का मौका मिलता रहा। वह दूसरी पीढ़ी थी।

मान्यवर, मैंने इन्दिरा जी को उस जमाने में देखा है जब वे छोटी बच्ची थीं। मैंने गांधी जी की बगल में उन्हें बैठे देखा, उनकी उंगली पकड़े हुए, चलते हुए देखा। मैंने उन्हें स्वतंत्रता संग्राम की सैनिका के रूप में भी देखा है। मैंने उन्हें सन् 1942 के आन्दोलन में, इलाहाबाद की नैनी जेल में जेलवासिनी के रूप में देखा। मैंने उन्हें अपने नेता और प्रधान मंत्री के रूप में भी देखा और उनके साथ अपने को काम करते हुए भी पाया है। संकटों में वे किस प्रकार नेतृत्व कर सकती हैं, चुनौतियों को स्वीकार कर सकती हैं, यह भी मैंने देखा है।

मान्यवर, मैं संजय के पिता फिरोज गांधी के साथ भी रह चुका हूं। गांधी जी के युग में देश के आन्दोलनों में वे मेरे साथ थे। जो भी आन्दोलन हुए, 1921 के आन्दोलन में तो नहीं, पर उसके बाद चाहे जो भी आन्दोलन हुए हैं, 30 के, 32 के और 40 के 42 के आन्दोलनों में मेरा उनका साथ था। वे संजय के पिता जी थे। इस कारण से, मान्यवर, यह परिवार पुश्तों से, पीढ़ियों से, देश की सेवा के मार्ग में, त्याग, बलिदान, दृढ़ता और नेतृत्व का प्रतीक रहा है। संजय जी इन्दिरा जी के पुत्र थे, उसी परिवार में थे। उन में विशालता, दृढ़ता और नेतृत्व प्रदान करने की शक्ति का होना स्वाभाविक था।

'आकरे पद्मरागाणाम जन्म कांच मणि: कुत: ।'

लाल की खान में शीशा पैदा नहीं हुआ करता; मान्यवर। उस परिवार में वह पैदा हुए थे। उन में देश को नेतृत्व प्रदान करने की शक्ति थी, सामर्थ्य था, प्रतिभा थी। आज वह सहसा लुप्त हो गई है। हमारा हृदय स्वभावत: इंदिरा जी की तरफ जाता है। उन में बड़ी क्षमता है, बड़ी शक्ति है। हम लोग बहुत दुखी हैं। एक धक्का लगा है। हृदय को और सहन करना मुश्किल हो रहा है। वह तो मां हैं, मान्यवर। उन्हें जो धक्का लगा है, आघात पहुँचा है, उस में हम सब की गहरी सहानुभूति है। हम तो परमात्मा से यही प्रार्थना कर सकते हैं कि वह क्षमता और दृढ़ता इंदिरा जी को, मेनका जी को और एक छोटा सा बच्चा है, उन सब को प्रदान करे, इस दुर्घटना की भयानक चोट को सहन करने की शक्ति उन में उत्पन्न करे। मैं इंदिरा जी को केवल इतना कह सकता हूं कि आपके दुख में हम सब दुखी हैं, सारा देश दुखी है। आप में दृढ़ता है, शक्ति है, राष्ट्र आपके नेतृत्व की प्रतीक्षा कर रहा है। आप में धैर्य है, सहन करने की शक्ति है। हम सब आपके दुख में दुखी हैं और उस दुख को बांटते हैं। भगवान आप और आपके सारे परिवार में इस कष्ट को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

हम सब उनके प्रति अपनी संवेदना प्रकट करते हैं और उनके दुख में मान्यवर, अपनी हार्दिक पीड़ा व्यक्त करते हैं।

श्री चरण सिंह (बागपत) : अध्यक्ष महोदय, आपने और माननीय त्रिपाठी जी ने इस दुघटना के सम्बन्ध में जो कुछ भी कहा है मैं अपने को और अपने दल को उसके साथ सम्बद्ध अर्थात् एसोसिएट करना चाहता हूं। यह मामूली घटना नहीं हुई है। एक

नौजवान जो बहुत से लोगों की आशाओं का केन्द्र बिन्दु था, जो बहुत पुरुषार्थी था और देश के लिए तरह तरह के सपने अपने हृदय में संजोए हुए था, वह चला गया है। जाना तो सब को ही है एक रोज़। जो आया है वह जरूर जाएगा। लेकिन समय होता है। यह एक अकाल मृत्यु है। यह दुखमय क्षण है, बहुत दारुण दुख का कारण है उन सभी के लिए जो मृतात्मा से किसी प्रकार का सम्बन्ध रखते हों। विशेषकर जो बहुत निकट के सम्बन्धी हैं जैसे हमारी बहन इन्दिरा जी, उनकी पत्नी, बच्चा तो अभी अबोध है, उनके दुख का किन्हीं शब्दों में वर्णन नहीं किया जा सकता। जैसा कि माननीय त्रिपाठी जी ने कहा मैं भी अपने और अपने दल की ओर से शोक संतप्त परिवार के प्रति संवेदना प्रकट करता हूं और आशा करता हूं कि आप हमारी संवेदना को उन तक पहुंचा देंगें और साथ ही परमात्मा से प्रार्थना करता हूं कि वह उनको इतना धैर्य दे कि वे इस आघात को सह सकें।

श्री समर मुखर्जी (हावड़ा) : हम एक ऐसे युवक की आकस्मिक मृत्यु पर गहरा दुःख प्रकट करते हैं, जो देश में चर्चा का विषय बन गया है। उनकी मृत्यु का समाचार इतना आकस्मिक था, कि जब हमें समाचार मिला, तो हमें इस बात पर विश्वास ही नहीं आ रहा था कि ऐसी दुर्घटना इतनी अचानक हो सकती है। उनकी याद हमारे मस्तिष्क में पूर्णतया ताज़ा है क्योंकि अभी परसों ही वह हमारे बीच थे। हम उनकी विचारधारा से भले ही सहमत न हों परन्तु इस बात में कोई संदेह नहीं है कि उनमें महान संभावनायें मौजूद थीं। यह निश्चय ही बड़ी हृदय-विदारक घटना है। उनके परिवार को जो यह गहरा आघात हुआ है, उस पर हम अपनी सहानुभूति व्यक्त करते हैं। हम आपसे निवेदन करते हैं कि आप हमारी संवेदना श्री संजय गांधी की माता तथा उनके परिवार के अन्य सदस्यों तक पहुंचा दें।

प्रो० मधु दण्डवते (राजापुर) : श्रीमान जी, जब कभी भी आप इस सदन में निधन सम्बन्धी उल्लेख करते हैं, प्रधान मंत्री भी अपने स्थान से खड़ी होकर आपका तथा सदन का साथ देती हैं। आज उनका ही स्थान रिक्त पड़ा है और हमें इस अपार क्षति के लिए प्रधानमंत्री के प्रति ही संवेदना व्यक्त करनी पड़ रही है। मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि प्रधान मंत्री तथा शोक संतप्त परिवार के अन्य सदस्यों के प्रति अपनी हार्दिक संवेदना व्यक्त करने में हम सब आपके साथ हैं। चौधरी साहब ने ठीक ही कहा है कि व्यक्ति को एक न एक दिन मरना ही होता है, परन्तु संजय गांधी की मृत्यु यौवन में ही हो गई। उनका राजनीतिक जीवन अत्यंत छोटा रहा, और उनका संसदीय जीवन भी अल्पकालिक ही रहा। उनका राजनीतिक जीवन साहस की भावना से परिपूर्ण था। साहस की वही भावना उन्होंने अपनी मृत्यु में भी प्रदर्शित की। यही विधि की विडम्बना है। परन्तु मुझे विश्वास है, उनकी साहस की यही भावना देश के अन्य युवकों को भी प्रेरणा देगी जिससे कि देश में युवाशक्ति का विकास किया जा सकेगा। मैं और अधिक कुछ नहीं कहना चाहता। परन्तु मैं प्रधानमंत्री की वेदना तथा दुःख को

समझता हूं क्योंकि वह केवल एक प्रधान मंत्री का दुःख या पीड़ा ही नहीं, अपितु एक मां की वेदना भी है। मुझे विश्वास है कि केवल इस सदन के सदस्य ही नहीं, अपितु इस देश के सभी बच्चे, सभी पुत्र तथा पुत्रियां संजय गांधी की मां के प्रति अपनी हार्दिक संवेदना व्यक्त करने में हमारे साथ हैं।

श्री सी०टी० दण्डपाणी (पोल्लाची) : हमारे देश का एक महान् व्यक्तित्व उठ गया है। आज प्रातः हमें जो आघात पहुँचा है, उससे संभल पाना हमें बहुत कठिन लग रहा है। श्री संजय गांधी नेहरू परिवार के एक महान् ओजस्वी व्यक्ति थे। उन्होंने इस देश की राजनीतिक पद्धति में नवजीवन का संचार किया। उन्होंने अपने आपको युवा-आन्दोलन के लिए समर्पित कर दिया और उन्हीं के कारण राजनीतिक क्षेत्र में नई विचार-धारा का जन्म हुआ। श्रीमान जी, प्रधान मंत्री के पुत्र का निधन हो गया है परन्तु आपके माध्यम से मैं प्रधान मंत्री को यह आश्वासन दिलाना चाहता हूँ कि इस देश का प्रत्येक युवक उनके बेटे की तरह कार्य करेगा तथा उनका साथ देता रहेगा। मुझे तथा मेरे दल को इससे गहरा आघात हुआ है और मैं अपने, अपने दल द्राविड़ मुनेत्र कश्गम तथा अपने नेता डा० करुणानिधि की ओर से इस घटना पर गहरा शोक-व्यक्त करता हूं तथा अपनी संवेदना व्यक्त करता हूं।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी (नई दिल्ली) : अध्यक्ष महोदय, जिस दिन लोक सभा की बैठक शुरू हुई थी और हम शोक प्रकट कर रहे थे, तब मैंने कहा था कि कोई कोई मौत झपट्टे की तरह से आती है, भरी दुपहरी में अंधियारा कर देती है, किसी फूल को पूरी तरह से खिलने से पहले ही झुलसा कर राख में बदल देती है। किसे पता था कि आज ऐसी ही मौत की अंधियारी छाया में हमें यहां इकट्ठा होना पड़ेगा ?

कल तक श्री संजय गांधी हमारे साथ थे। मित्रों के लिए आशा का केन्द्र, मतभद रखने वालों के लिए एक चुनौती, लेकिन चाहे समर्थक हों, चाहे विरोधी, सब इस बात से सहमत थे कि उनका एक ऐसा व्यक्तित्व है, जो ख़तरों से खेलता है, चुनौतियों से जूझता है, जिसने आगे बढ़ने का संकल्प किया है और वह तरुणाई का प्रतीक बन कर उभर रहा है।

जब ऐसा लगता था कि उनके लिए सार्वजनिक जीवन का पटाक्षेप हो गया, तब भी संजय गांधी परिस्थितियों से लड़े, और इतना ही नहीं कि लड़े, उनपर विजय प्राप्त करने में सफल हुए। आपने ठीक कहा है, मैं त्रिपाठी जी और अन्य मित्रों से सहमत हूं कि एक उभरता हुआ व्यक्तित्व हमारे बीच में से उठ गया।

मुझे संस्कृत का एक सुभाषित याद आ रहा है : "मुहूर्त ज्वलितं श्रेयः न च धमायते चिरम्" -- सालों तक घुआं देने के बजाये एक मुहूर्त के लिए प्रकाशमान हो कर बुझ जाना ज्यादा अच्छा है। मगर बुझ जाना अच्छा नहीं हो सकता है। वह प्रकाश लगातार बना रहता, बहुत दिनों तक बना रहता, लेकिन क्रूर काल के सामने किसी का बस नहीं चलता है।

अभी मैंने उनके शव को देखा। मौत में भी एक मासूमियत उनके चेहेरे पर छायी हुई थी। और मौत भी शायद ख़तरों से खेलने के उनके संकल्प में से प्राप्त हुई। सवेरे सवेरे हवाई जहाज़ ले कर उड़ जाना, वह बड़े व्यस्त हैं, लोग आते हैं, पार्टी का संचालन कर रहे थे, शासन की नीतियों का निर्धारण कर रहे थे, लेकिन फिर भी हवा में उड़ना, खुद हवाई जहाज़ चलाना। मुझे याद है कि एक बार पंडित जवाहरलाल नेहरू ने कहा था: "लिव डेंजरसली" नौजवानों से कहा था कि खतरे ले कर जिओ। और ऐसा ही एक जीवन ख़तरों से खेलते खेलते भरी जवानी में आज ख़तरे का आहार बन गया।

हम सब आज शोक से भरे हुए हैं। प्रधान मंत्री के प्रति, संजय गांधी के परिवार के प्रति किन शब्दों में संवेदना व्यक्त करें, यह तय करना मेरे लिए तो मुश्किल है। अभी मैंने इन्दिरा जी को देखा। हम लोग जो वहां जा रहे थे, वे अधिक विचलित थे। मां हो कर भी वह बड़ी दृढ़ थीं। हम उनके प्रति अपनी संवेदना प्रकट करते हैं और उम्मीद करते हैं कि भगवान् उनके शोक-संतप्त परिवार को इस हृदय-विदारक चोट को सहन करने की शक्ति देगा।

श्री इन्द्रजीत गुप्त (बसिरहाट) : श्रीमान जी, मैं नहीं समझता कि इस अवसर पर कोई लम्बा भाषण दिया जा सकता है। इस आकस्मिक दुर्घटना से हम सब को गहरा आघात हुआ है। और मैं यह समझता हूँ कि यहां चाहे किन्हीं शब्दों में शोकाभिव्यक्ति की जाये, उनसे उस मां के दुःख को कम नहीं किया जा सकता, जिसने अपना बेटा खो दिया है। श्री संजय गांधी का व्यक्तित्व विवादास्पद था परन्तु उनकी मृत्यु के साथ सभी प्रकार के राजनीतिक विवाद स्वतः समाप्त हो गये हैं। पिछले शुक्रवार को जब मैंने उन्हें यहां देखा, तो वह अपने पूर्ण यौवन पर थे, तथा शक्ति तथा उत्साह से भरपूर थे। परन्तु इसके बावजूद भी मृत्यु कब किसी व्यक्ति विशेष की ओर अपना क्रूर हाथ बढ़ा दे, इसके बारे कोई कुछ नहीं कह सकता। इसमें संदेह नहीं है कि जिन परिस्थितियों में उनकी मृत्यु हुई, उससे निश्चय ही सम्पूर्ण देश में शोक की लहर फैल गई है।

प्रधान मंत्री, जैसाकि सम्पूर्ण देश तथा विश्व जानता है अदम्य साहसी हैं, जो लोग आज प्रातः उनसे मिल चुके हैं—मुझे अभी उनसे मिलने का अवसर नहीं मिला है—उन्होंने पहले ही कह दिया है कि, वह वैसा ही व्यवहार कर रही हैं जैसा कि उनसे कल्पना की जा सकती है—सम्भवतः वह हम सब में से सर्वाधिक शांत तथा साहसी है। मैं मानता हूं यह आघात उनके लिए हृदय विदारक है। परन्तु इस समय तो मेरे समक्ष उनका मां का वही रूप आ रहा है जिसने कि अन्य लोगों की तरह अपनी सम्पूर्ण आशाओं तथा अकांक्षाओं को संजय पर लगाया हुआ था। सत्ताधारी दल के अपने मित्रों के दुःख तथा निराशा में मैं निश्चय ही समझ सकता हूं तथा उनके प्रति अपनी संवेदना व्यक्त करता हूं परन्तु मां तथा युवा पत्नी के लिए तो इसकी पीड़ा असहनीय जान पड़ती है। उनका पुत्र तो अभी इतना छोटा है कि वह समझ ही नहीं सकेगा कि यह क्या हुआ है।

श्रीमान जी, मैं अपनी तथा अपने दल की ओर से शोक-संतप्त परिवार के प्रति अपना गहरा दुःख तथा संवेदना व्यक्त करता हूं और आपसे आशा करता हूं कि आप इसे उन तक पहुंचा देंगे ।

श्री यशवन्त राव चव्हाण (सतारा) : अध्यक्ष महोदय आज प्रातः हमें जो समाचार मिला वह इतना आकस्मिक तथा दुखदायी था कि उस पर विश्वास कर पाना कठिन था । अभी हम कल ही अपनी पत्नी के साथ उनकी लेह यात्रा का समाचार पढ़ रहे थे कि उसके कुछ ही क्षण बाद हमें यह समाचार मिला कि एक दुर्घटना घटी है और उनकी मृत्यु हो गई है ।

श्री संजय गांधी इसी सदन के सदस्य थे और हमने दो ही दिन पूर्व उन्हें सदन की कार्यवाही में भाग लेते हुये देखा था । इस महान् सदन की कार्यवाही में अपना योगदान देने का कार्य अभी उन्होंने आरम्भ ही किया था । वह कांग्रेस(आई) के युवानेता थे । वह अपने जीवन का विकास एक शक्तिशाली व्यक्तित्व के रूप में कर रहे थे । अतः देश के युवा वर्ग में उनके अनुयायियों का होना स्वाभाविक ही था । विरोधी दल के लोगों का भी उसमें विश्वास था । यह दुर्भाग्य की बात है कि उनका उदीयमान जीवन इस प्रकार आकस्मिक तथा दुःखान्त ढंग से समाप्त हो गया । जैसा कि श्री इन्द्रजीत गुप्त द्वारा कहा गया है, प्रधान मंत्री—जो कि प्रधान मंत्री होने के साथ साथ माता भी हैं—उनके लिए तथा युवा पत्नी के लिए यह एक असहनीय विपदा है । इस क्षति के लिए हम उन दोनों अर्थात श्रीमती गांधी तथा श्रीमती मेनका के प्रति अपनी संवेदना व्यक्त करते हैं ।

संजय गांधी का व्यक्तित्व एक राष्ट्रीय व्यक्तित्व के रूप में उभर कर सामने आ रहा था और इसीलिए न केवल भारत में अपितु सम्पूर्ण विश्व भर के लोगों की आंखें इस उभरते हुए व्यक्तित्व पर लगी हुई थीं । परन्तु विधाता को कुछ और ही मंजूर था और दुर्भाग्यवश उनका जीवन समाप्त हो गया । उनका जीवन आशाओं तथा आकांक्षाओं से भरपूर था ।

अध्यक्ष महोदय, मैं अपनी तथा अपने दल की ओर से आपसे निवेदन करती हूं कि आप हमारी संवेदना श्रीमती इन्दिरा गांधी तक एक माता, प्रधान मंत्री तथा दल की नेता के रूप में पहुंचा दें । हम सभी घोर दुःख की इस घड़ी में उनके परिवार के साथ सहानुभूति व्यक्त करते हैं । जब संसद की ओर से शोकाभिव्यक्ति की जाती है तो उसका तात्पर्य यही होता है कि सम्पूर्ण राष्ट्र की ओर से शोकाभिव्यक्ति की जा रही है; यह शोकाभिव्यक्ति केवल संसद सदस्यों की नहीं होती अपितु इस में देश का प्रत्येक नरनारी तथा बालक शामिल होता है । आप कृपया इसे श्रीमती गांधी तथा उनके परिवार तक पहुँचा दीजिये ।

श्री ए०नीलालोहिथादसन (त्रिवेन्द्रम) : अध्यक्ष जी, श्री संजय गांधी के आकस्मिक निधन पर जो विचार प्रकट किए गए हैं, उनके साथ मैं और अपने साथियों को शामिल करना हूं ।

श्री संजय गांधी नेहरू परिवार के एक सदस्य होने के कारण बचपन से ही उनकी जान-पहचान सारे भारत और सारी दुनिया में होती थी । राजनीति में भी वे बचपन से ही प्रभावित रहे हैं, लेकिन 1975 के बाद ही वे सक्रिय राजनीति में आए । सक्रिय राजनीति में आने के बाद पिछले पांच वर्षों के अन्दर उन को राजनीति में अनुकूल और प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना करना पड़ा । एक राष्ट्र के जीवन में और एक व्यक्ति के जीवन में पांच वर्ष तो बिल्कुल छोटा काल है । इस पांच वर्ष के बीच में उनको कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा । राजनीतिक जीवन में उन्होंने अनुकूल और प्रतिकूल परिस्थितियों का मुस्कराहट के साथ और धैर्य के साथ सामना करते हुए एक इतिहास भी खींचा । देश के कुछ नौजवानों के लिए तो वे प्रेरणास्रोत रहे । जो नौजवान साथी उनके कर्मों से प्रभावित रहे हैं, उनके लिए भविष्य में भी प्रेरणास्रोत रहेंगे --ऐसा मेरा विचार है ।

उनके आकस्मिक निधन से एक बहुत बड़ी हानि हमारी राजनीति और हमारे राष्ट्र को हुई है, इसलिए कि इस देश के लोग और दुनिया के कुछ लोग उनसे बहुत ही अपेक्षा और कामना करते रहे हैं । उनके निधन पर मैं और अपने साथियों की ओर से श्रीमती इन्दिरा गांधी और श्री संजय गांधी के परिवार के अन्य लोगों के प्रति संवेदना प्रकट करता हूं ।

श्री मनीराम बागड़ी (हिसार) : मान्यवर, यह कहर की मौत आज न सिर्फ देश में बल्कि दुनिया में एक आग की तरह से खबर बन कर फैली है । यह सभी चाहे कोई मां है पुत्र वाली, चाहे कोई पत्नी है पति वाली, चाहे कोई भाई है भाई वाला और चाहे कोई बच्चा है बाप वाला, समस्त परिवार में उसके दु:ख की घटना फैली है ।

मान्यवर, मैं यह बात मानता हूं कि यह खबर आम तौर से किसी के दिल पर जचती नहीं कि यह दुर्घटना घटी है । मेरा मकान बिलकुल नज़दीक है । ज्योंही एक आदमी भाग कर मेरे पास आया और मुझे कहा कि यह दुर्घटना हो गई है, तो मैंने कहा --- चुप करो, इस बात को फैलाओ नहीं, कहीं यह गलत न हो, ऐसा हो ही नहीं सकता । उस ने कहा---मैं मौके पर हो कर आया हूँ । मैं ने फिर भी यही कहा---ऐसा नहीं हो सकता । जब मैं खुद मौके पर गया और देखा तो डाक्टर के कहने से भी तसल्ली नहीं हो रही थी । पं० कमलापति जी वहां खड़े थे, दूसरे लोग खड़े थे और यह बात सही है, इन्दिरा जी हिन्दुस्तान की प्रधान मंत्री हैं, कल की नेता हैं, सदन की नेता हैं, 60 साल से ऊपर की उम्र है, नौजवान बेटे की मां हैं, उम्मीद यह थी कि जिस तरह से गांव के घरों में मां बेटे की मौत सुन कर पछाड़ खाकर गिर जाती है, बेहोश हो जाती है, वह भी पछाड़

खाकर गिर जायेगी, लेकिन जब मैंने उन को बात करते हुए, अपने दिमाग़ पर सन्तुलन को कायम रखते हुए देखा, तो मन में यह भाव आया कि आखिर भारत की सभ्यता, संस्कृति और ज्ञान कहीं-न-कहीं तो टिका हुआ है, जो मौत की स्थिति में भी धीरज बंधाता है। मौत यकीनी है—यह ठीक है, मगर यह तो मौत नहीं है, कहर है। मौत होती है—समय के अनुसार। मौत होती है तो बेटों के कंधों पर बाप-दादे जाते हैं। लेकिन ऐसा दुर्भाग्य भी कभी-कभी देखने में आता है, जब दादा और परदादा के कन्धों पर बेटा और पोता जाए।

मान्यवर, संजय जी इस सदन के माननीय सदस्य थे। युवा लोग उन को नेता के रूप में देखते थे। पक्ष के लोग उन को एक बढ़ते हुए सितारे की तरह से समझते थे। विपक्ष के लोग उन की आलोचना करते थे और संसार के लोग उन को भारत की उन विभूतियों में से गिनते थे जिन से देश का कुछ भविष्य बनने वाला था। मेरी तरफ से और मेरे साथियों की तरफ से यह जो शोक प्रस्ताव सदन पास करने जा रहा है—उस में शामिल होते हुए, मैं इन्दिरा जी, संजय जी की पत्नि, उन के पुत्र, उन के युवा भाई और उन के परिवार के सभी सदस्यों और मित्रों, साथ में उन के दल, तथा जिस दल के वे सचिव थे उस दल को, खास कर उन के युवा साथियों, जिन के कारण वे आगे बढ़ कर आये, जो क्षति और तकलीफ हुई है, उस में अपने आप को भी शामिल करता हूं। मैं भगवान् से प्रार्थना करता हूं कि उन के परिवार और उन के दोस्तों और मित्रों को इस महान् क्षति को सहन करने की शक्ति दे। साथ ही भगवान् संजय जी तथा उन के साथ जो संचालक थे, जिन का निधन हुआ है, उन की आत्मा को शान्ति दे और इस देश में कभी भी ऐसी अकाल युवा मृत्यु न हो—ऐसी भगवान से प्रार्थना करता हूं।

इन शब्दों के साथ इस सदन में सभी दलों के नेताओं ने जो विचार प्रकट किये थे हैं, उन के साथ हम भी शामिल होते हैं।

श्री जी०एम० बनातवाला (पोन्नानी) : अध्यक्ष महोदय, मैं भारतीय मुस्लिम लीग की ओर से यहां व्यक्त की गई संवेदना में अपने आपको शरीक करता हूं।

यह एक ऐसा दुःख है जिसे शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता और यह सुन कर कि संजय गांधी नहीं रहे हैं, बहुत आघात हुआ। श्री संजय गांधी भले ही न रहे हों वह आपत्तियों का साहस से मुकाबला करने के ज्वलंत उदाहरण थे। निश्चय ही एक उदीयमान व्यक्ति का जीवन बीच में ही समाप्त हो गया है।

हम सभी को गहरा शोक हुआ है। परन्तु हम आशा करते हैं कि प्रधानमंत्री इस अपार दुःख का सामना भी उसी शक्ति तथा साहस से करेंगी, जोकि उनके चरित्र का अंग है।

श्रीमान जी, हम दिवंगत आत्मा को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। उर्दू का एक शेर है :

खिल के गुल कुछ तो बहारे जां फिजा दिर
हसरत तो उन गुंचों पर है, जो बिन खि

श्री अमरराय प्रधान (कूच बिहार) : श्र
का समाचार सुनकर हमें गहरा आघात है। अपने मित्रों की ओर से अपने को, आपके तथा स
साथ सम्बद्ध करता हूं।

अध्यक्ष महोदय, अब संजय गांधी नहीं रहे लिया है। परन्तु श्रीमान जी हमें इस बात का अं युवा व्यक्ति की मृत्यु पर शोक व्यक्त करना पड़ केवल 33 वर्ष की थी और वह शक्ति तथा जो हमारी संवेदना तथा दुःख, शोक-संतप्त परिव प्रधान मंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी, तथा उनकी पत्नी श्रामता मनका तक पहुचा दाजय।

श्री गुलाम रसूल कीचक (अनंतनाग) : श्रीमान जी, हमने अपना भाई स्वर्गीय संजय गांधी खो दिया है। वह केवल श्रीमती इन्दिरा गांधी का पुत्र ही नहीं था अपितु भारत माता का सपूत था। श्री संजय गांधी की मृत्यु के साथ हमने एक ऐसा उभरता हुआ युवा नेता खो दिया है जिस पर भावी भारत की आशायें केंद्रित थीं। उनके जीवन का एक लक्ष्य था। उस लक्ष्य को प्राप्त करने की गतिशीलता उनके मस्तिष्क में भी और बहुत कम समय में ही उन्होंने अपनी इस गतिशीलता को पूर्ण सीमा तक प्रदर्शित किया था। उनका नाम न केवल इतिहास में रहेगा अपितु युवा पीढ़ी का मार्गदर्शन करता रहेगा कि वह किस प्रकार देश की सेवा के लिए संघर्ष करते रहे। यह दुखद क्षति केवल नेहरू परिवार को नहीं हुई है अपितु हम सभी के लिए तथा पूर्ण देश के लिए एक आघात है। जैसा कि मेरे मित्रों ने कहा, हमने उन्हें इन्दिरा जी के बेटे के रूप में देखा। हमने एक ऐसा सूरज देखा है जिसे निकलते ही बादलों के अंधियारे ने छिपा लिया।

सदन में व्यक्त की गई समवेदना के साथ मैं अपने आपको शरीक करता हूं। मैं अपनी, अपनी सरकार तथा अपने दल नेशनल काफ्रेंन्स की ओर से इस अकाल मृत्यु पर शोक संतप्त परिवार के प्रति गहरे दुःख की अभिव्यक्ति करता हूं। मैं प्रार्थना करता हूं कि ईश्वर उनकी आत्मा को शांति प्रदान करे तथा ईश्वर उनके परिवार को इस दुःख को सहने की शक्ति तथा धैर्य प्रदान करे।

श्री एन० सुन्दरराजन (शिवकाशी) : अध्यक्ष महोदय, अपने नेता थिरू एम० जी० आर० तथा अपने दल अखिल भारतीय अन्ना द्रविड़ मुनेत्र कश्गम, तथा स्वयं अपने आपको मैं श्री संजय गांधी के आकस्मिक निधन पर सदन में व्यक्त की गई संवेदना के साथ सम्बद्ध करता हूं। मानवता के इस खिलते हुए फूल को उसकी सम्पूर्ण सुगन्ध के साथ हमसे छीन लिया गया है। मानवीय जीवन की सब से बड़ी विडम्बना यही होती

है जबकि कुछ लोगों को युवा अवस्था में ही काल छीन लेता है। ऐसा लगता है समय रुक गया है। मैं अपने देश की नेता श्रीमती इन्दिरा गांधी के प्रति अपनी हार्दिक समवेदना व्यक्त करता हूं जिनके लिए यह क्षति कभी पूरी नहीं होगी। मैं राष्ट्र के युवा नेता की स्मृति में मौन रूप से नतमस्तक होता हूं।

श्री फ्रेंक एन्थनी (नामनिर्देशित आंग्ल-भारतीय) : अध्यक्ष महोदय, जो घटना घटी है, वह केवल उनकी माता के लिए ही नहीं अपितु सम्पूर्ण परिवार के लिए एक ऐसी दुखपूर्ण घटना है, जिसकी शब्दाभिव्यक्ति नहीं की जा सकती। निस्संदेह यह सम्पूर्ण राष्ट्र के लिए भी ऐसी घटना है जिसको शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता। अभी हाल ही में श्री संजय गांधी बहुत अधिक कठिन व्यक्तिगत आपदाओं, चरित्र हनन तथा झूठे मुकदमों के जंजाल से मुक्त होकर भारत के सार्वजनिक जीवन में आये ही थे और केवल उनके दल को ही नहीं अपितु सम्पूर्ण देश को उनसे बहुत आशा थी। अध्यक्ष महोदय यह एक ऐसा दुःखदायी अवसर है जिसकी अभिव्यक्ति हेतु प्रयाप्त शब्द नहीं मिल रहे हैं। हमारी हार्दिक संवेदना शोक संतप्त परिवार के साथ है। ईश्वर उन्हें इस घोर दुख को सहने की शक्ति प्रदान करे।

अध्यक्ष महोदय : हम श्री संजय गांधी की मृत्यु पर गहरा शोक व्यक्त करते हैं और मुझे विश्वास है कि प्रधान मंत्री तथा शोक-संतप्त परिवार को अपनी हार्दिक संवेदना देने में सम्पूर्ण सदन मेरे साथ है।

अब हम कुछ क्षणों के लिए मौन खड़े होंगे।

इसके पश्चात् सदस्यगण कुछ क्षणों के लिए मौन खड़े रहे।

अध्यक्ष महोदय : दिवंगत आत्मा के प्रति सम्मान व्यक्त करने के लिए अब सभा स्थगित होती है सभा कल प्रातः 11 बजे पुनः समवेत होगी।

11.54 म०पू०

इसके पश्चात् लोक सभा मंगलवार, 24 जून, 1980/3 आषाढ़, 1902 (शक) के ग्यारह बजे तक के लिए स्थगित हुई।

प्रभासमुनी—1/लोक सभा/80—30-7-80—210 कापियां।